कबीर का कालजयी चरित्र-दर्शन

सोना, सज्जन और दरार वाला घड़ा

डॉ. मुकेश नायक

'सोना, साधु, सज्जन जन, टूटे जुड़ें सौ बार. दुर्जन कुम्भ कुम्हार के, एकई धक्क दरार॥'

सदियों पहले कही गई कबीरदास की यह वाणी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है. यह हमें अपने मूल्यों की रक्षा करने, आत्मचिंतन करने और अपने चरित्र को निरंतर परिष्कृत करने की प्रेरणा देती है. परिस्थितियाँ हमें गिरा सकती हैं, लेकिन यदि हमारे संस्कार मजबूत हैं तो हम पुन: उठ खड़े होंगे. आइए, सोने की तरह जीवन की अग्नि में तपकर और अधिक निर्मल बनें, साधु की तरह आत्मनिरीक्षण करें और सज्जन की तरह हर परिस्थिति में अपने नैतिक मूल्यों को जीवित रखें. क्योंकि अंतत: मनुष्य की पहचान उसके धन, पद, प्रसिद्धि या बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसके चरित्र, संस्कार और मानवीय मूल्यों से होती है. यही कबीरदास के इस अमर दोहे का सार है और यही सार्थक जीवन का सबसे बड़ा मंत्र भी.

संत कबीरदास का यह दोहा भारतीय चिंतन की उन अमूल्य धरोहरों में से एक है, जो कुछ शब्दों में जीवन का गहनतम दर्शन प्रस्तुत कर देता है. यह दोहा केवल अच्छाई और बुराई का अंतर नहीं बताता, बल्कि मनुष्य के चरित्र, संस्कार और आत्मिक विकास का ऐसा मर्म खोलता है, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना सदियों पहले था.

कबीरदास सबसे पहले सोने का उदाहरण देते हैं. सोना चाहे कितना भी मलिन क्यों न हो जाए, उसकी वास्तविक प्रकृति कभी नहीं बदलती. धूल उसकी चमक को कुछ समय के लिए ढक सकती है, अशुद्धियाँ उसकी आभा को कम कर सकती हैं, किन्तु जैसे ही वह अग्नि में तपता है, सारी अशुद्धियाँ जलकर समाप्त हो जाती हैं. वह पहले से अधिक शुद्ध, अधिक दमकता हुआ और अधिक मूल्यवान बनकर सामने आता है. अग्नि सोने का विनाश नहीं करती, बल्कि उसके वास्तविक स्वरूप को और अधिक निखार देती है.

मनुष्य का जीवन भी कुछ ऐसा ही है. जीवन की कठिनाइयाँ, असफलताएँ, मोह, क्रोध या भ्रम हमें कभी-कभी गलत निर्णय लेने के लिए विवश कर देते हैं. हम भटक सकते हैं, गिर सकते हैं, टूट सकते हैं, किन्तु यदि हमारे भीतर सत्य, करुणा, ईमानदारी और सदाचार के संस्कार जीवित हैं, तो हम फिर उठ खड़े होने की क्षमता रखते हैं. हमारी भूलें हमारी पहचान नहीं बनतीं, बल्कि हमारे अनुभव और आत्मविकास का आधार बन जाती हैं.

इसी कारण कबीरदास ने सोने के साथ साधु और सज्जन का उदाहरण दिया है. साधु केवल वह नहीं जो बाहरी रूप से धार्मिक दिखाई दे. सच्चा साधु वह है जिसके भीतर सरलता, दया, क्षमा, आत्मसंयम और निरंतर आत्मचिंतन का भाव हो. उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति वह है जो अपने चरित्र, व्यवहार और नैतिक मूल्यों से समाज का विश्वास अर्जित करता है. ऐसे लोग यदि कभी भूल भी कर बैठें, तो उनका अंत:करण उन्हें चैन से बैठने नहीं देता. वे अपनी त्रुटि स्वीकार करते हैं, पश्चाताप करते हैं और स्वयं को सुधारने का साहस दिखाते हैं.

इसके विपरीत कबीरदास कुम्हार के कच्चे घड़े का उदाहरण देकर एक गहरी चेतावनी भी देते हैं. यदि मिट्टी के घड़े में एक बार दरार पड़ जाए, तो बाहर से वह कितना भी सुंदर क्यों न दिखाई दे, उसमें पानी नहीं ठहर सकता. उसकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है. उसी प्रकार जब किसी मनुष्य के भीतर छल, कपट, अहंकार, स्वार्थ और बेईमानी स्थायी प्रवृत्ति बन जाते हैं, तब उसका बाहरी आडंबर उसके वास्तविक व्यक्तित्व को नहीं छिपा सकता. अवसर मिलने पर उसका असली स्वभाव अवश्य प्रकट हो जाता है.

यहीं इस दोहे का सबसे महत्वपूर्ण संदेश निहित है. गलती करना और चरित्रहीन बन जाना दोनों अलग-अलग बातें हैं. संसार में कोई भी मनुष्य पूर्ण नहीं है. अज्ञान, क्रोध, लालच, मोह या परिस्थितियों के प्रभाव में कोई भी व्यक्ति कभी-कभी गलत निर्णय ले सकता है. लेकिन जिसकी अंतरात्मा जीवित है, वह अपनी भूल को पहचान लेता है और उसे सुधारने का प्रयास करता है.

इसके विपरीत जो व्यक्ति बार-बार छल को ही अपना साधन बना लेता है, दूसरों को कष्ट पहुँचाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति करता है और अपने गलत आचरण को उचित ठहराने लगता है, उसके लिए परिवर्तन अत्यंत कठिन हो जाता है. क्योंकि समस्या उसके किसी एक व्यवहार में नहीं, बल्कि उसके मूल चरित्र में घर कर चुकी होती है.

आज का समाज अक्सर इस सूक्ष्म अंतर को भूल जाता है. हम किसी व्यक्ति की एक भूल के आधार पर उसके पूरे व्यक्तित्व का निर्णय कर देते हैं. किसी से एक गलती हो जाए तो उसे जीवनभर उसी दृष्टि से देखने लगते हैं. जबकि किसी मनुष्य का वास्तविक मूल्यांकन उसकी भूल से नहीं, बल्कि उस भूल के बाद उसकी प्रतिक्रिया से होना चाहिए. जो अपनी त्रुटि स्वीकार कर स्वयं को बदल ले, वही सच्चा सज्जन है.

आज सफलता का अर्थ अक्सर धन, पद, प्रभाव और प्रसिद्धि तक सीमित कर दिया गया है. लेकिन कबीरदास हमें स्मरण कराते हैं कि इन सबसे ऊपर चरित्र का स्थान है. धन फिर कमाया जा सकता है, प्रतिष्ठा दोबारा अर्जित की जा सकती है और पद भी पुन: प्राप्त हो सकता है, किन्तु यदि चरित्र खो गया तो उसकी पुनर्स्थापना सबसे कठिन साधना बन जाती है. बाहरी उपलब्धियाँ तभी सार्थक हैं, जब भीतर का व्यक्तित्व भी उतना ही उज्ज्वल हो.

कबीर का यह संदेश निराश व्यक्ति के लिए आशा का दीपक भी है. यदि जीवन में कभी असफलता मिली हो, यदि परिस्थितियों ने आपको तोड़ दिया हो या आपसे कोई भूल हो गई हो, तो हताश होने की आवश्यकता नहीं है. यदि आपके भीतर आज भी सत्य के प्रति सम्मान है, अपनी त्रुटियों के प्रति पश्चाताप है और स्वयं को बेहतर बनाने की इच्छा है, तो समझ लीजिए कि आपके भीतर का सोना अभी भी सुरक्षित है. आत्मचिंतन, अनुशासन और सतत प्रयास से वही सोना फिर पहले से अधिक दमक सकता है.

किन्तु साथ ही यह दोहा हमें सावधान भी करता है. यदि हम अपनी गलतियों को ही स्वभाव बना लें, दूसरों को धोखा देना सफलता मानने लगें और अपने स्वार्थ के लिए किसी भी सीमा तक जाने को उचित समझें, तो हमारे व्यक्तित्व में ऐसी दरारें पड़ जाती हैं जो धीरे-धीरे पूरे जीवन को भीतर से खोखला कर देती हैं. तब बाहरी सफलता भी सम्मान नहीं दिला पाती.

कहानी

हरी मेथी, तुलसीराम और नींबू

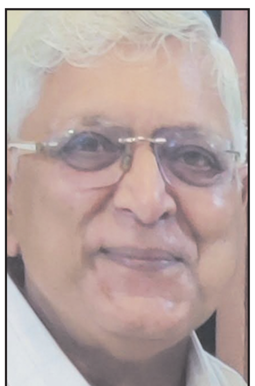

गोविंद शर्मा

तय यह हुआ कि नर्मदा नदी पर बन रहे बांध के ले आउट और अन्य निर्माण कार्य को देखने जाना है .कई इलाके डूब में आने के कारण कालांतर में देख नहीं पाएंगे. खंडवा से बांध स्थल तक का मार्ग हरे भरे जंगलों के बीच से गुजरता है .टकारी का रेतीला घाट,घुमावदार रास्ते रोमांच को बढ़ाते गये. सोलर लैंप से रोशन स्ट्रीट लाइट उन दिनों किसी अजूबे से कम नहीं थी. दो पहाड़ियों के बीच बन रहे नर्मदा सागर जिसे बाद में इंदिरा सागर नाम दिया गया का ले आउट देखना रोमांचित कर गया .खैर इस खूबसूरत सफर का पड़ाव था नर्मदा नगर.

कहानी का नींबू का पौधा नब्बे के दशक में इसी नर्मदानगर से लाया गया था .पतले छिलके,पीला रंग,भरपूर रस,मनभावन खुशबू .नींबू नहीं मानों माँ नर्मदा के किनारे से वरदान मिल गया. पूरा परिवार नर्मदा सागर बांध बनने की पहली प्रक्रिया, कॉफ़र डेम देखने गए थे. कैसे नदी का मार्ग बदलकर बांध बनाया जाता है .नदी का मार्ग बदलने के लिए मुख्य धारा के समानांतर टनल से नदी को डाइवर्ट किया जाता है .बड़े बड़े अर्थ मूवर्स से टनल को आकार देने का काम जारी था. दूर से टनल एक पाइप का ओपनिंग दिखाई देती है .टनल के मुहाने पर खड़ा होकर देखा हमारा अस्तित्व एक बड़े वृत्त की परिधि पर एक नन्हें बिंदु की तरह लग रहा था .इसी टनल से नर्मदा अपने परिवर्तित मार्ग से गुजरेगी .अद्भुत,मानव की जिजीविषा का अद्भुत नमूना था टनल और काफ़र डैम.

वापसी में भांजी के घर आंगन में लगे नींबू के भार को देखा .सरकारी आवास मुझे खूब लुभाते हैं .आगे पीछे आंगन और सामने पार्किंग .बगीचे के लिए भरपूर जगह. खुला खुला सा घर .नई बसाहट के कारण सब कुछ व्यवस्थित .किसी आदर्श कस्बे की तरह हर चीज करीने से से बनाई गई .आंगन में नींबू का पेड़ बरबस आपका ध्यान आकर्षित कर लेता है .गुच्छे के गुच्छे नींबू पेड़ पर चारों तरफ से लटक रहे थे .प्रकृति की सजावट का मुकाबला कोई नहीं कर सकता .क्या रंग संयोजन,क्या गुच्छों की बनावट,नीबुओं का अलग अलग आकार में प्रबंधन किसी सिद्धहस्त कलाकार के बस में ही हो सकता है.

नींबू घर आंगन में लगाने का मना किया जाता है .क्यों घर में कांटे बोना,क्यों लोगों के बीच खटास बांटना .नींबू वैसे भी टोन टोटके से जुड़ा फल है. चौराहों पर आधी रात को बला किसी और के सर टालने के लिए पूजन सामग्री के साथ कटे नींबू छोड़ जाते हैं .मान्यता है कि जाने अनजाने जो इसे लांघेगा बला उसके साथ चली जायेगी. दशहरे की पूर्व संध्या पर देहरी पर बलि देने की मुद्रा में नीबुओं को काटकर रखा जाता रहा है .इधर मालवा निमाड़ के स्वादिष्ट मसालों के साथ नींबू की शिकंजी,भर गर्मी में राहत का अमृत बन जाती है. गाड़ियों में नजर से बचाने के लिए नींबू मिर्च की लटकन अब कृत्रिम प्लास्टिक की भी मिलने लगी है.

बहरहाल नर्मदा नगर से लाया गया पौधा सुरक्षित रोपा गया .अपना समय आने पर गुच्छे के गुच्छे नींबू पेड़ पर लटकन बनकर शोभा बढ़ाने लगे. वही रंग,वही पतला छिलका,वही ढेर सारा रस,वही मादक खुशबू .नर्मदा नगर का पेड़ घर के आंगन में अवतरित हो गया .मोहल्ला मेरे बचपन के जैन मित्रों का है, लिहाजा न तो हड्डी की खाद डाली और न मेरी हुई मछली जड़ में डालने का टोटका किया. यानी हमारा नींबू निहायत शुद्ध शाकाहारी नींबू के नाम से कॉलोनी में जाना जाने लगा. साल में दो बार झोला भर भर कर नींबू देने में इस पेड़ ने कभी कंजूसी नहीं की .हमने भी इसकी देखभाल में कंजूसी नहीं की. नर्मदा के किनारे मेरा ननिहाल जबलपुर मध्यप्रदेश का प्रमुख नगर है. जाबाली ऋषि की इस पुण्य भूमि पर मेरी पदस्थापना पदोन्नति के ठीक बाद हुई .एक साल बाद निकट के गांव धनपुरी में शाखा प्रबंधक के पद का दायित्व मिला. महाकौशल के ग्रामीण क्षेत्रों में भरपूर अपनापन दिया. शिक्षक,व्यापारी,पंडित, किसान,छात्र,युवा सब जैसे बरसों से मुझे जानते हों. ग्रामीण इलाके में पदस्थापना से सारे अधिकारी आरंभ में घबराते हैं लेकिन एक बार इन ग्रामीणों से साथ रच बस गये तो शहर को पूरी तरह से भूल जाते हैं .धनपुरी मुख्य मार्ग पर एक समृद्ध गांव था .हाई स्कूल तक पढ़ाई की सरकारी व्यवस्था थी .इन स्कूलों के बच्चों के छात्रवृत्ति के खाते बैंक में होने से माह में कम से कम एक बार मुलाकात हो ही जाती थी.

भाई तुलसीराम धनपुरी में करीबी मित्रों में से एक थे .तुलसीराम बड़ी मोहरी का पायजामा और जेब वाली बंडी में सारे गांव को नाप लेते थे. देशी बोली में खूब बातें करते और सारे इलाके की खबरें दे जाते. तुलसीराम हमारा स्थानीय अखबार भी थे और लोगों से जुड़ने का जरिया भी. पति-पत्नी और चार एकड़ खेती उनका संसार था .दोपहर भोजन के बाद गांव का फेरा लगाना और दिलीप की दुकान से पान खाकर वापस घर चले जाना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था.

तुलसीराम ने आज जेबवाली बंडी के ऊपर कुर्ता भी पहन रखा था .पता चला किसी वैवाहिक कार्यक्रम में पास के गांव जाना है .गांव में कुर्ता पहनना उन्हें किसी कैदी सा अहसास देता था .तुलसीराम से पहचान,दोस्ती कब निकटता में बदल गई पता ही नहीं चला .कच्चे आम,अचार के लिए लाना हो या ग्राम पड़वार के मीठे बड़े अमरूद,तुलसीराम टेबल पर रखकर चले जाते .हरे चने खेत से सिकवाकर लाते. तुलसीराम ?दोस्त भी ऐसे सच्चे कि यदि कुछ नागवार गुजरे तो मुंह पर ही बोल देते. एक दिन मेथी की चार गड्डी लेकर आ गये .उन दिनों स्थानीय जबलपुर बाजार में उसकी कीमत पचास पैसे होगी. मैने ले जाने की झंझट से बचने के लिए दफ्तरी को कहा ये ले जाना .तुलसीराम के चेहरे के भाव एकदम बदल गये .आंखों में हल्की सी नमी उतर आई जो मैं उस समय पढ़ न सका.

इधर स्थानांतरण के बाद गृहनगर वापसी हुई .हमारे नींबू का पेड़ खूब फलफूल रहा था .अब एक बार में सैकड़ों नीबुओं का भार आने लगा. पेड़ की देखभाल हमारी दिनचर्या का खास हिस्सा था .उसकी जाले हटवाना, थाल बनवाना, चूना घोलकर समय समय पर देशी खाद के साथ देना .नींबू इलाके में हमारी पहचान बन गया .कॉलोनी में,दोस्तों और सहकर्मियों को खूब नींबू भेजे जा रहे थे. खुद हाथों से पाले पेड़ के नींबू देते समय मन में अनूठा आनंद होता था. नींबू के गुणों को सुनना हमारा खास शगल हो गया था. पेड़ को पालते पोसते उससे खास जुड़ाव भी हो गया था.

मित्र वीरेंद्र पड़ोस की शाखा में पदस्थ थे .बिना किसी सूचना के उनके घर नींबू देने जा पहुंचा .वे सपरिवार कहीं बाहर गए थे. मैने उनके द्वार पर ताले के साथ नींबू से भरी थैली लटका दी. शाम अचानक मुझे ख्याल आया कि वीरेंद्र तक नींबू पहुंचे या कोई पड़ोसी उठा ले गया .मोबाइल पर वीरेंद्र मिल गए .वीरेंद्र ने कहा.. भाई अभी अभी लौटा हूँ .नींबू की थैली कोई जादू टोना कर रख गया होगा,सोचकर फेंकने जा रहा था .ठीक समय पर आपने संपर्क कर लिया .मेरी जान हलक में आ गई थी. वीरेंद्र को बताया मैने ही नींबू रखे थे .मैने सोचा.. हे भगवान,मेरे नींबू बच गए.

जिंदगी के कई गणित समझने में हमें बरसों लग जाते हैं कि पच्चास पैसे की मेथी सिर्फ पचास पैसे की नहीं होती .मेरी आंखों में ठीक वैसी नमी उतरी जैसी सालों पहले तुलसीराम की आंखों में थी.

क्लास by बड़े भाई

ऐसे चुनें अपने लिए अच्छा साथी

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, आज आए दिन हम कितनी घटनाएँ पढ़ते देखते हैं कि जिसमें किसी के पास महंगी गाड़ी, बंगला, कीमती कपड़े देखकर हम उसमें अपने लिए एक अच्छा दोस्त, अच्छा जीवनसाथी, अच्छा इंसान देखने लग जाते हैं, फिर हमें बदले में ऐसा धोखा, दुर्व्यवहार और अपमान मिलता है कि फिर कुछ पूछो ही मत..

ध्यान दीजियेगा मेरे कहने का मतलब यह कतई नहीं है कि धन सम्पन्न व्यक्ति ऐसा ही होता है बल्कि मैं कहूँगा ऐसे बहुत लोग हैं, दुनिया भरी पड़ी है ऐसे लोगों से जो धन वैभव के साथ विनम्र, व्यवहार कुशल, मदद करने वाले हैं.. मेरे कहने का मतलब बस यह है कि अच्छे साथी के लिए बस इसे ही मानक न बनाएं.. हम बस किसी के धनसंपन्न होने को ही उसमें सब अच्छे गुण वाला मान लेते हैं.. ऐसा नहीं करना है, ऐसा तराजू लेकर चलेंगे तो धोखा खाते रहेंगे..

छोटे भाई, कई बार हम यह सोचते हैं कि जिसके पास पैसा रुपया है उसी का साथ ही फायदेमंद हो सकता है, वही काम का हो सकता है और जिसके पास नही है वो न तो अच्छा इन्सान है , न अच्छा दोस्त , न अच्छा साथी..सच कहूँ तो इस विचार के साथ यदि आप चुनते आए हैं तो विचार करिये कितनी बार आप कितना परेशान हुए हैं.. ईश्वर करे परेशान न हुए हों लेकिन बहुत संभावना है इसकी..

तो अब बात आती है करें क्या.. छोटे भाई तीन चीजे व्यवहार, वाणी और विचार.. सदैव इससे संपन्न व्यक्ति को वरीयता दें, यह व्यक्ति का मन और बुद्धि दोनों को बताता है.. इनसे आपको हमेशा अच्छा अनुभव होगा..और इनसे संपन्न व्यक्ति में ही आपको अच्छा मित्र, अच्छा जीवनसाथी मिल सकता है. यह धनवान हों या न हों, लेकिन इनके विचारों से आपको बहुत कुछ आपके मन का मिल सकता है..इनसे ही आपकी जीवन यात्रा सही मायने में आनंद भरी हो सकती है.. बाकी व्यक्ति का स्वाभाव परिस्थिति के हिसाब से बदल जाता है लेकिन यह मापदंड बहुत दूर तक आपका साथ निभा सकता है..

बस यही कहना था धन्यवाद..

कविता

ऋण

राकेश धर द्विवेदी

ऋण वैसे तो दोनों का नाम
'श' से प्रारंभ होता था
एक शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता था
और दूसरा शोषक वर्ग का।
दोनों ने ही ऋण लिया था
एक ने ऋण लिया कि इसलिए
कि बंजर धरती से उगा सके कुछ ज्यादा अन्न
भर सके कुछ लोगों का पेट
पूरा कर सके पथराई आंखों से देखे गए सपने।
तो दूसरे ने लिया ऋण
कि पूर्ण कर सके हवाई महत्वाकांक्षा
उन तमाम हसरतों की जो नवाबी थीं।
और बन सके तमाम दौलत का स्वामी।
ऋण न चुका पाने की स्थिति में
एक ने प्राण त्याग दिया और दूसरे ने राष्ट्र।

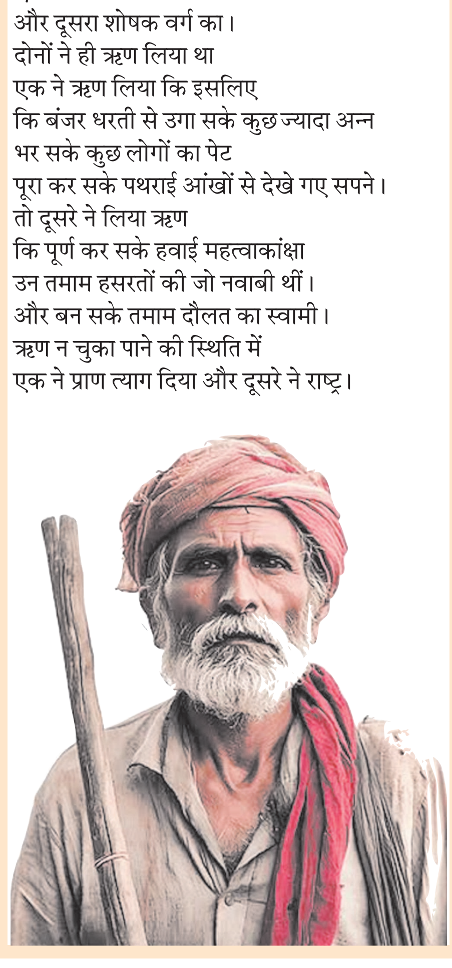

डिजिटल दुनिया

सुचिता सकुनिया

इस डिजिटल दुनिया में
सब कुछ बस एक क्लिक
पर मिल जाता है,
पर जाने क्यों
सुकून ढूँढने में पूरा दिन
निकल जाता है।

ऑनलाइन तो हर रिश्ता
नज़र आता है,
पर वो अपनेपन का
अहसास नहीं आता है।
भीड़ तो बहुत है इस
आभासी दुनिया में,
फिर भी हर इंसान
अंदर से अकेला नज़र
आता है।

मोबाइल की रोशनी में
अब रातें जल्दी गुजर जाती हैं,
पर अपनों के साथ बैठकर बातें
करने वाली
वो शामें कहीं पीछे छूट
जाती हैं।
तकनीक ने दुनिया को
तो करीब ला दिया,
पर जो पास थे,
उन्हें दूरियों का
अहसास करा
दिया।

सोशल मीडिया
की चमक में
शायद
अहसासों पर
धुंध सी छा गई
है,
ज़िन्दगी जो कभी
अपनों संग
हँसते-हँसते कट जाती थी,

आज दो पल की हँसी के बाद भी
हर चेहरा तन्हा नज़र आता है।

क्यों ना एक बार फिर
उन जज़्बातों को जगाते हैं।
उन्हें सिर्फ वीडियो कॉल पर नहीं,
चाय पर बुलाते हैं।

Candy Crush और Free Fire
के ज़माने में
चलो आज फिर
पुरानी महफ़िल जमाते हैं।

कुछ देर मोबाइल एक तरफ
रखकर,
फिर दिल से दिल मिलाते हैं,
इस डिजिटल दुनिया में
चलो फिर से
थोड़ा जीना सीख जाते हैं।

कविताएं

परम विश्राम

अजय मिश्रा

ध्येय क्या हैं लक्ष्य क्या हैं,
यह सब तुमने जान लिया,
उड़ती चेहरे पर हवाईयां,
व्यग्र मन जग परछाइयां,
किस निधि अभिमान
किया,

रहा क्या सामर्थ्य तुम्हारा,
सर्व नियन्ता हैं जो सबका,
उसको क्या पहचान लिया,

हैं आधार एक सबका वह,
कभी प्रार्थना कर पाये,
भ्रमित कहां भरमाये,

सर्व समर्थ की शरण,
आत्मबल अवतरण,
कलुष नाश निर्मल मन,
शान्त विधा संचरण,
निज पथ चल न पाये,

क्रम से भजन बढावै,
दिव्यता आवैं मोह नशावै,
प्रगटै ज्ञान , ज्योत उजारे,

कृपा निधान ,केवल श्रीराम ,
कर ध्यान भज श्रीराम,
भजै सो पावें, परम विश्राम

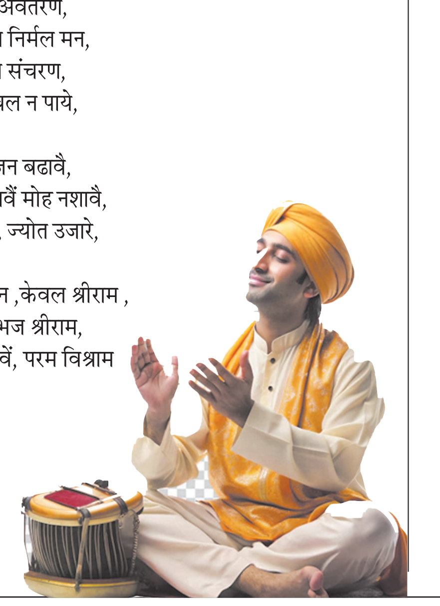

रश्मि शर्मा

भ्रम

चिड़िया भिड़ जाती है
खुद से ही
प्रतिकृति कांच में देख
हम हंसते हैं
उसकी नादानी पर

क्रोध के जलते अंगारे
रखते हैं हम उसी तरह
खुद की हथेली पर कि
फेंक रहे हैं दुनिया पर
लेकिन जलाते हैं
खुद को ही भ्रम में

घृणा नफरत को
कोने में छुपा
भिड़ रहे हैं खुद से ही अनजाने ही
और कमजोर करते हैं
खुद को बार-बार

नीम

नहीं मिला उसे
प्यार के बदले प्यार

ताने,उलाहने उतरते रहे
गहरे आग बनकर
आंसू की तपिश
बदलती रही
मन के कुँए का पानी

दिन भर की थकान
बदलने लगी
खून का रंग

उम्र के साथ
बढ़ता रहा कसैलापन
और वह ना चाहते हुए
भी
नीम हो गई

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी